दादा भगवान कथित

# भुगते उसी की भूल

हमें जो कुछ भी भुगतना पड़ता है, वह हमारी ही भूल का परिणाम है।

दादा भगवान कथित

# भुगते उसी की भूल


मूल गुजराती संकलन : डॉ. नीरू बहन अमीन

हिन्दी अनुवाद : महात्मागण

**प्रकाशक** : अजीत सी. पटेल
दादा भगवान आराधना ट्रस्ट
'दादा दर्शन', 5, ममतापार्क सोसायटी,
नवगुजरात कॉलेज के पीछे, उस्मानपुरा,
अहमदाबाद - 380014, गुजरात
**फोन :** (079) 27540408

© All Rights reserved with - Dada Bhagwan Foundation Trust,
© 5, Mamta Park Society, B\h. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad - 380014, Gujarat, India.
No part of this book may be used or reproduced in any manner whatsoever without written permission from the holder of the copyrights.

**प्रथम संस्करण** : प्रतियाँ 5,000 जनवरी, 1997
**रीप्रिन्ट** : प्रतियाँ 101,000 नवम्बर, 2003 से जून, 2017
**नई प्रिन्ट** : प्रतियाँ 10,000 जून, 2019

**भाव मूल्य** : 'परम विनय' और
'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

**द्रव्य मूल्य** : 10 रुपए

**मुद्रक** : अंबा ऑफसेट
B-99, इलेक्ट्रोनीक्स GIDC,
क-6 रोड, सेक्टर-25,
गांधीनगर-382044.
**फोन :** (079) 39830341

# त्रिमंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥
जय सच्चिदानंद

# दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

## हिन्दी

1. ज्ञानी पुरुष की पहचान
2. सर्व दु:खों से मुक्ति
3. कर्म का सिद्धांत
4. आत्मबोध
5. मैं कौन हूँ ?
6. वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी
7. भुगते उसी की भूल
8. एडजस्ट एवरीव्हेयर
9. टकराव टालिए
10. हुआ सो न्याय
11. चिंता
12. क्रोध
13. प्रतिक्रमण
14. दादा भगवान कौन ?
15. पैसों का व्यवहार
16. अंत:करण का स्वरूप
17. जगत कर्ता कौन ?
18. त्रिमंत्र
19. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म
20. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार
21. प्रेम
22. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (सं.)
23. दान
24. मानव धर्म
25. सेवा-परोपकार
26. मृत्यु समय, पहले और पश्चात्
27. निजदोष दर्शन से... निर्दोष
28. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार
29. क्लेश रहित जीवन
30. गुरु-शिष्य
31. अहिंसा
32. सत्य-असत्य के रहस्य
33. चमत्कार
34. पाप-पुण्य
35. वाणी, व्यवहार में...
36. कर्म का विज्ञान
37. सहजता
38. आप्तवाणी - 1
39. आप्तवाणी - 2
40. आप्तवाणी - 3
41. आप्तवाणी - 4
42. आप्तवाणी - 5
43. आप्तवाणी - 6
44. आप्तवाणी - 7
45. आप्तवाणी - 8
46. आप्तवाणी - 9
47. आप्तवाणी - 13 (पूर्वार्ध व उत्तरार्ध)
48. आप्तवाणी - 14 (भाग-1)
49. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (पूर्वार्ध व उत्तरार्ध)
50. ज्ञानी पुरुष (भाग-1)

★ **दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई है। वेबसाइट www.dadabhagwan.org पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।**

★ **दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में ''दादावाणी'' मैगेज़ीन प्रकाशित होता है।**

# ‘दादा भगवान’ कौन?

जून 1958 की एक संध्या का करीब छ: बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर ‘दादा भगवान’ पूर्ण रूप से प्रकट हुए। और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्‌भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। ‘मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?’ इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजी भाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

‘व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं’, इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया, बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षुजनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्‌भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को ‘दादा भगवान कौन?’ का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ‘‘यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं हैं, वे तो ‘ए.एम.पटेल’ हैं। हम ज्ञानीपुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे ‘दादा भगवान’ हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और ‘यहाँ’ हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।’

# संपादकीय

जब हमें बिना किसी भूल के भुगतना पड़ता है, तब हृदय बार-बार द्रवित होकर पुकारता है कि इसमें मेरी क्या भूल? इसमें मैंने क्या गलत किया है? फिर भी जवाब नहीं मिलता, तब अपने भीतर बसे वकील वकालत करना शुरू कर देते हैं कि इसमें मेरी ज़रा सी भी भूल नहीं है। इसमें सामने वाले की ही भूल है न? अंत में ऐसा ही मनवा लेता है, जस्टीफाइ करवा देता है कि, 'लेकिन उसने यदि ऐसा नहीं किया होता तो फिर मुझे ऐसा गलत क्यों करना पड़ता या बोलना पड़ता?' इस तरह खुद की भूल ढक देते हैं और ऐसा प्रमाणित कर देते हैं कि सामने वाले की ही भूल है। और फिर कर्मों की परंपरा सर्जित होती है।

परम पूज्य दादाश्री ने, सामान्य लोगों को भी सभी तरह से समाधान करवाए, ऐसा जीवनोपयोगी सूत्र दिया, 'भुगते उसी की भूल'। इस जगत् में भूल किसकी? चोर की या जिसका चोरी हुआ, उसकी? इन दोनों में से भुगत कौन रहा है? जिसका चोरी हुआ, वही भुगत रहा है न? जो भुगते, उसी की भूल। चोर तो पकड़े जाने के बाद भुगतेगा, तब उसे उसकी भूल का दंड मिलेगा। आज खुद की भूल का दंड मिल गया। खुद भुगते, तो फिर किसे दोष देंगे? फिर सामने वाला निर्दोष ही दिखेगा। अपने हाथों से टी-सेट टूट जाए तो किसे कहेंगे? और नौकर से टूटे तो? ऐसा है। घर में, धंधे में, नौकरी में, सभी जगह 'भूल किसकी है?' ढूँढना हो तो पता लगाना कि 'कौन भुगत रहा है?' उसी की भूल। जब तक भूल है, तभी तक भुगतना पड़ेगा। जब भूल खत्म हो जाएगी, तब इस दुनिया का कोई व्यक्ति, कोई संयोग, हमें भोगवटा नहीं दे सकेगा।

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री ने 'भुगते उसी की भूल' का विज्ञान बताया है। यह ऐसा अनमोल ज्ञानसूत्र है जिसका उपयोग करने से खुद की तमाम उलझनों का हल निकल जाएगा!

डॉ. नीरू बहन अमीन के जय सच्चिदानंद

# भुगते उसी की भूल

## कुदरत के न्यायालय में...

इस जगत् के न्यायाधीश तो जगह-जगह हैं लेकिन कर्म जगत् के कुदरती न्यायाधीश तो एक ही है, 'भुगते उसी की भूल'। यही एक न्याय है, जिससे पूरा जगत् चल रहा है और भ्रांति के न्याय से पूरा संसार खड़ा है।

एक क्षणभर के लिए भी जगत् न्याय से बाहर नहीं रहता। जिसे इनाम देना हो, उसे इनाम देता है। जिसे दंड देना हो, उसे दंड देता है। जगत् न्याय से बाहर नहीं रहता, न्याय में ही है, संपूर्ण न्यायपूर्वक ही है। लेकिन सामने वाले की दृष्टि में यह नहीं आता, इसलिए समझ नहीं पाता। जब दृष्टि निर्मल होगी, तब न्याय दिखेगा। जब तक स्वार्थ दृष्टि होगी, तब तक न्याय कैसे दिखेगा?

## ब्रह्मांड के स्वामी को भुगतना क्यों?

यह पूरा जगत् 'अपनी' मालिकी का है। हम 'खुद' ही ब्रह्मांड के मालिक हैं। फिर भी हमें दुःख क्यों भुगतना पड़ा, यह ढूँढ निकालो न? यह तो, हम अपनी ही भूल से बंधे हुए हैं। लोगों ने आकर नहीं बाँधा। वह भूल खत्म हो जाए तो फिर मुक्त। और वास्तव में तो मुक्त ही हैं, लेकिन भूल की वज़ह से बंधन भुगत रहे हैं।

अगर खुद ही न्यायाधीश, खुद ही गुनहगार और खुद ही वकील हो, तब न्याय किसके पक्ष में होगा? खुद के पक्ष में ही। फिर खुद अपनी पसंद का ही न्याय करेगा न! खुद निरंतर भूलें ही करता रहता है। इसी तरह जीव बंधन में आता है। भीतर का न्यायाधीश कहता है कि 'आपकी भूल हुई है।' फिर भीतर का ही वकील वकालत करता है कि 'इसमें मेरा क्या दोष?' ऐसा करके खुद ही बंधन में आता है। खुद के आत्महित के लिए जान लेना चाहिए कि किसके दोष से बंधन है? जो भुगते, उसी का दोष। लोकभाषा में देखें तो अन्याय है लेकिन भगवान की भाषा का न्याय तो यही कहता है कि, 'भुगते उसी की भूल'। इस न्याय में तो बाहर के न्यायाधीश का कुछ काम ही नहीं।

जगत् की वास्तविकता का रहस्यज्ञान लोगों की जागृति में है ही नहीं और जिस ज्ञान-अज्ञान की वजह से भटकना पड़ता है, उसके बारे में तो सभी को खबर है। अगर जेब कट जाए तो उसमें भूल किसकी? इसकी जेब नहीं कटी और तुम्हारी ही क्यों कटी? दोनों में से अभी कौन भुगत रहा है? 'भुगते उसी की भूल!' इसे 'दादा' ने ज्ञान में 'जैसा है वैसा' देखा है कि भुगते उसी की भूल है।

## सहन करना है या समाधान करना?

लोग सहनशक्ति बढ़ाने को कहते हैं, लेकिन वह कब तक रह सकती है? ज्ञान की डोर तो आखिर तक पहुँचती है। सहनशक्ति की डोर कहाँ तक पहुँचती है? सहनशक्ति लिमिटेड है, ज्ञान अनलिमिटेड है। यह 'ज्ञान' है ही ऐसा कि किंचित्मात्र भी सहन करने को नहीं रहता। सहन करना यानी लोहे को आँखों से देखकर पिघलाना। उसके लिए शक्ति चाहिए। जबकि ज्ञान से किंचित्मात्र सहन किए बगैर, परमानंद सहित मुक्ति है! और फिर यह भी समझ में आता है कि यह तो हिसाब पूरा हो रहा है और मुक्त हो रहे हैं।

जो दुःख भुगतता है, वह उसकी भूल है और सुख भोगता है तो वह उसका इनाम। लेकिन भ्रांति का कानून निमित्त को पकड़ता है। भगवान का कानून, रियल कानून तो जिसकी भूल होगी, उसी को पकड़ेगा। यह कानून एक्ज़ेक्ट है और उसमें कोई परिवर्तन कर ही नहीं सकता। जगत् में ऐसा कोई कानून नहीं है कि जो किसी को *भोगवटा* (सुख-दुःख का असर) दे सके! सरकारी कानून भी *भोगवटा* नहीं दे सकता।

यदि चाय का प्याला आपसे फूट जाए तो आपको दुःख होगा? खुद से फूटे तो क्या आपको सहन करना पड़ता है? और यदि आपके बेटे से फूट जाए तो दुःख, चिंता और कुढ़न होती है। खुद की ही भूल का हिसाब है, यदि इतना ही समझ में आ जाए तो दुःख या चिंता होगी? यह तो दूसरों के दोष देखकर दुःख और चिंता खड़ी करते हैं। रात-दिन जलन ही पैदा करते हैं, और ऊपर से खुद को ऐसा लगता है कि मुझे बहुत सहन करना पड़ रहा है।

खुद की कुछ भूल होगी, तभी सामने वाला कहता होगा न? तो फिर भूल सुधार लो न! इस जगत् में कोई जीव किसी जीव को तकलीफ नहीं दे सकता, इतना स्वतंत्र है और यदि कोई तकलीफ दे रहा है तो वह इसलिए कि पहले दखल की है। भूल खत्म कर लो, फिर हिसाब नहीं रहेगा।

**प्रश्नकर्ता :** यह थ्योरी ठीक से समझ में आ जाए तो मन को सभी प्रश्नों का समाधान रहेगा।

**दादाश्री :** समाधान नहीं, एक्ज़ेक्ट ऐसा ही है। यह सेट किया हुआ नहीं है, बुद्धिपूर्वक की बात नहीं है, यह ज्ञानपूर्वक है।

## आज गुनहगार-लुटेरा या लुट जाने वाला?

समाचारों में रोज़ आता है कि, 'आज टैक्सी में दो आदमियों ने किसी को लूट लिया, फलाँ फ्लेट में किसी महिला को बाँधकर लूट

लिया।' ऐसा पढ़कर हमें घबराने की ज़रूरत नहीं है कि मैं भी लुट गया तो? ऐसा विकल्प करना ही गुनाह है। इसके बजाय तू निश्चिंत होकर रह न! तेरा हिसाब होगा तो ले जाएगा, वर्ना कोई बाप भी पूछने वाला नहीं है। इसलिए तू निर्भय होकर रह। ये अखबार वाले तो लिखेंगे, तो क्या हम डर जाएँ? यह तो ठीक है कि बहुत कम डाइवॉर्स होते हैं, लेकिन ये बढ़ जाएँ तो सभी को शंका होने लगेगी कि हमारा भी डाइवॉर्स हो जाएगा तो? जिस जगह पर एक लाख लोग लूट गए हों, वहाँ पर भी आपको घबराने की ज़रूरत नहीं है। आपका कोई बाप भी *ऊपरी* नहीं है।

लूटने वाला भुगतता है या फिर जो लुट गया, वह भुगतता है? कौन भुगतता है यह देख लेना। लुटेरे मिले और लूट लिया। अब रोना मत, आगे चलते जाना।

जगत् दुःख भुगतने के लिए नहीं है, सुख भोगने के लिए है। जिसका जितना हिसाब होगा, उतना ही होगा। कुछ लोग सिर्फ सुख ही भोगते हैं, ऐसा क्यों? कुछ लोग सदा दुःख ही भुगतते रहते हैं, ऐसा क्यों? इसलिए क्योंकि खुद ऐसा हिसाब लेकर आया है।

'भुगते उसी की भूल' यह एक ही सूत्र घर की दीवार पर लिखा होगा तो भुगतते समय समझ जाओगे कि इसमें भूल किसकी है? इसलिए कई घरों में दीवार पर बड़े अक्षरों में लिखा रहता है कि, 'भुगते उसी की भूल'। फिर यह बात भूलेंगे ही नहीं न!

ऐसा है कि यदि कोई व्यक्ति पूरा जीवन इस सूत्र को यथार्थता से समझकर इस्तेमाल करेगा तो उसे गुरु बनाने की आवश्यकता नहीं रहेगी और यह सूत्र ही उसे मोक्ष में ले जाएगा।

## ग़ज़ब की वेल्डिंग हुई है, यह

'भुगते उसी की भूल' यह बहुत बड़ा सूत्र है। संयोगानुसार किसी

काल के हिसाब से शब्दों की वेल्डिंग होती है। वेल्डिंग हुए बिना काम नहीं आता न! वेल्डिंग हो जाना चाहिए। ये शब्द वेल्डिंगयुक्त हैं। इस पर तो एक बड़ी पुस्तक लिखी जा सकती है। इतना सार है इसमें!

एक तो 'भुगते उसी की भूल' कहा तो एक ओर की पूरी पज़ल हल हो जाएगी और दूसरा 'व्यवस्थित' कहा तो दूसरी ओर की पज़ल भी हल हो जाएगी। खुद को जो दुःख भुगतना पड़ता है, वह खुद का ही दोष है, अन्य किसी का दोष नहीं है। जो दुःख देता है, उसकी भूल नहीं है। जो दुःख देता है, संसार में उसकी भूल है और 'भुगते उसी की भूल', भगवान के कानून में है।

**प्रश्नकर्ता :** दुःख देने वाले को भुगतना तो पड़ेगा ही न?

**दादाश्री :** बाद में जब वह भुगतेगा, उस दिन उसकी भूल मानी जाएगी, लेकिन आज तो आपकी भूल पकड़ में आई है।

## भूल, बाप की या बेटे की?

एक बाप है, उसका बेटा रात को दो बजे घर लौटता है। यों तो पचास लाख की पार्टी है। बाप बेटे की राह देखता रहता है कि वह आया या नहीं आया? और जब बेटा लौटा तो लड़खड़ाता हुआ घर में आया। बाप ने पाँच-सात बार समझाने की कोशिश की तो लड़के ने सुना दी। तब फिर चुप होकर वापस आ गए। फिर अगर हमारे जैसा कोई कहे न कि, 'छोड़ो न झंझट, उसे पड़ा रहने दो न। आप सो जाओ न चैन से।' तब कहता है 'बेटा तो मेरा है न!' लो! जैसे उसी में से न जन्मा हो!

बेटा तो आकर सो जाता था। फिर मैंने बाप से पूछा, 'बेटा तो सो जाता है, बाद में आप भी सो जाते हैं या नहीं?' तब कहा, 'मुझे कैसे नींद आएगी? यह भैंसा तो शराब पीकर आता है और

सो जाता है लेकिन मैं थोड़े ही भैंसा हूँ?' मैंने कहा, 'वह तो सयाना है।' देखो, ये सयाने दुःखी हो रहे हैं! फिर मैंने उनसे कहा, 'भुगते उसी की भूल। वह भुगत रहा है या आप भुगत रहे हैं?' तब कहने लगे, 'भुगत तो मैं ही रहा हूँ! पूरी रात का जागरण...' मैंने कहा, 'उसकी भूल नहीं है, इसमें आपकी भूल है। आपने पिछले जन्म में उसे बहकाकर बिगाड़ा था, इसका यह परिणाम आया है। आपने बिगाड़ा था। अब वही माल आपको लौटाने आया है।' ये दूसरे तीन बेटे अच्छे हैं, आप उसका आनंद क्यों नहीं उठाते? सभी अपनी ही खड़ी की हुई मुसीबतें हैं। यह जगत् समझने जैसा है!

उस बूढ़े के बिगड़े हुए बेटे से मैंने एक दिन पूछा, 'तेरे पिता को कितना दुःख होता है, तुझे कुछ दुःख नहीं होता?' लड़का बोला, 'मुझे क्या दुःख है? पिता कमाकर बैठे हैं फिर मुझे कैसी चिंता! मैं तो मौज़ उड़ाता हूँ।'

अर्थात् इन बाप-बेटे में कौन भुगत रहा है? बाप। इसलिए बाप की ही भूल। भुगते उसी की भूल। यह लड़का जुआ खेले या कुछ भी करे फिर भी उसके भाई चैन से सो गए हैं न! उसकी माँ भी आराम से सो गई है न! जबकि यह अभागा बूढ़ा अकेला जाग रहा है। इसलिए उसी की भूल। उसकी क्या भूल? तब कहे, इस बूढ़े ने इस लड़के को पूर्वजन्म में बिगाड़ा था। इसलिए पिछले जन्म के ऐसे ऋणानुबंध बंधे हैं, जिनके कारण बूढ़े को ऐसा *भोगवटा* आता है और लड़का तो जब खुद की भूल भुगतेगा, तब उसे अपनी भूल का एहसास होगा। दोनों में से कौन दुःखी हो रहा है? जो दुःखी हो रहा है, उसी की भूल। यह इतना, एक ही कानून समझ गया तो पूरा मोक्षमार्ग खुला हो जाएगा।

फिर उस बाप को समझाया, 'अब आप ऐसा रास्ता करते रहना

कि उसका सुधार हो। उसे कैसे फायदा हो, उसे नुकसान नहीं हो, ऐसा कुछ करते रहना। मानसिक दु:ख मत उठाना। उसके लिए शारीरिक श्रम आदि सब करना। पैसे हों तो देना, लेकिन मन में दु:खी मत होना।

वर्ना फिर भी हमारे यहाँ नियम क्या है? भुगते उसी की भूल है। बेटा शराब पीकर आया और आराम से सो गया और आपको सारी रात नींद नहीं आती। अगर तब आप मुझसे कहो कि 'यह भैंसे की तरह सो रहा है और मुझे नींद नहीं आती।' तो मैं कहूँगा कि 'अरे, आप भुगत रहे हो इसलिए आपकी भूल है। वह जब भुगतेगा, तब उसकी भूल कही जाएगी।'

**प्रश्नकर्ता :** माँ-बाप जो भुगतते हैं, वह तो ममता और ज़िम्मेदारी के कारण भुगतते हैं न?

**दादाश्री :** सिर्फ ममता और ज़िम्मेदारी ही नहीं, लेकिन मुख्य कारण है उनकी भूल। ममता के अलावा अन्य कई कॉज़ेज़ होते हैं, लेकिन तू भुगत रहा है इसलिए तेरी भूल है। इसलिए किसी का दोष मत निकालना, वर्ना फिर से अगले जन्म का हिसाब बंधेगा।

अर्थात् दोनों के कानून बिल्कुल अलग हैं। कुदरत के कानून को मान्य रखोगे, तो आपका रास्ता सरल हो जाएगा और सरकारी कानून को मान्य रखोगे, तो उलझते रहोगे।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन दादा, उसे खुद को वह भूल दिखनी चाहिए न?

**दादाश्री :** नहीं, खुद को नहीं दिखेगी। उसे दिखाने वाला चाहिए। वह उसका विश्वसनीय होना चाहिए। एक बार भूल दिखी तो फिर दो-तीन बार में उसे अनुभव में आ जाएगी।

इसलिए हमने कहा था कि अगर समझ में नहीं आए तो घर में इतना लिखकर रखना कि 'भुगते उसी की भूल'। आपको सास बहुत सताती हो, रात को आपको नींद नहीं आ रही हो और सास को देखने जाओ तो वह तो सो चुकी होती है और खर्राटें ले रही होती है, तो फिर आप नहीं समझ जाओगी कि 'भूल अपनी है'। सास तो चैन से सो गई है। भुगते उसी की भूल। यह बात आपको पसंद आई या नहीं? तो भुगते उसी की भूल, इतना ही समझ में आ जाए तो घर में एक भी झगड़ा नहीं रहेगा।

पहले तो जीवन जीना सीखिए। घर में झगड़े कम हो जाएँ, बाद में दूसरी बात सीखना।

## सामने वाला नहीं समझे तो?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ लोग ऐसे होते हैं कि हम चाहे कितना ही अच्छा बर्ताव करें, फिर भी वे नहीं समझते।

**दादाश्री :** वे नहीं समझते तो उसमें अपनी ही भूल है कि हमें समझदार क्यों नहीं मिला! हमसे इनका ही संयोग क्यों हुआ? जब कभी भी हमें कुछ भी भुगतना पड़ता है तो वह अपनी ही भूल का परिणाम है।

**प्रश्नकर्ता :** तो क्या हमें यह समझना चाहिए कि 'मेरे कर्म ही ऐसे हैं?'

**दादाश्री :** अवश्य। अपनी भूल के बिना हमें भुगतना नहीं पड़ता। इस जगत् में ऐसा कोई भी नहीं है कि जो हमें किंचित्मात्र भी दु:ख दे सके और यदि कोई दु:ख देने वाला है, तो वह अपनी ही भूल है। सामने वाले का दोष नहीं है, वह तो निमित्त है। इसलिए 'भुगते उसी की भूल'।

कोई पति और पत्नी आपस में बहुत झगड़ रहे हों और दोनों के सो जाने के बाद अगर आप गुपचुप देखने जाओ तब पत्नी तो गहरी नींद सो रही होती है और पति बार-बार करवटें बदल रहा होता है, तो आप समझ लेना कि सारी भूल पति की है, क्योंकि पत्नी नहीं भुगत रही है। जिसकी भूल होती है, वही भुगतता है और यदि पति सो रहा हो और पत्नी जाग रही हो, तो समझना कि पत्नी की भूल है। 'भुगते उसी की भूल'। यह तो बहुत गुह्य 'साइन्स' है। पूरा जगत् निमित्त को ही काटने दौड़ता है।

## इसमें क्या न्याय?

जगत् नियम के अधीन चल रहा है, यह गप्प नहीं है। इसका 'रेग्युलेटर ऑफ द वर्ल्ड' भी है, जो निरंतर इस वर्ल्ड को रेग्युलेशन में ही रखता है।

बस स्टैन्ड पर एक महिला खड़ी है। अब बस स्टैन्ड पर खड़े रहना कोई गुनाह तो नहीं है? इतने में एक बस आती है और ड्राइवर के हाथ से स्टीयरिंग पर नियंत्रण नहीं रहने से बस फुटपाथ पर चढ़ जाती है और स्टैन्ड तोड़कर, उस महिला को कुचल देती है। वहाँ पाँच सौ लोगों की भीड़ जमा हो जाती है। उन लोगों से कहें कि 'इसका न्याय कीजिए'। तब वे लोग कहेंगे कि, 'बेचारी यह महिला बगैर गुनाह के मारी गई। इसमें महिला का क्या गुनाह? यह ड्राइवर नालायक है।' उसके बाद चार-पाँच अक़्लमंद लोग इकट्ठे होकर कहेंगे कि, 'ये बस ड्राइवर कैसे हैं, इन लोगों को तो जेल में बंद कर देना चाहिए, ऐसा करना चाहिए, वैसा करना चाहिए। महिला बेचारी बस स्टैन्ड पर खड़ी थी, उसमें उसका क्या गुनाह?' अरे, आप उसका गुनाह नहीं जानते। उसका गुनाह था, इसीलिए तो उसकी मौत हुई। अब इस ड्राइवर का गुनाह तो, जब वह पकड़ा जाएगा

तब। इसका जब केस चलेगा और वह केस सफल हुआ तो गुनहगार माना जाएगा, वर्ना बेगुनाह साबित हुआ तो वह छूट जाएगा। उस महिला का गुनाह आज पकड़ा गया। अरे, बिना हिसाब के कोई मारता होगा? उस महिला ने पिछला हिसाब चुकाया। समझ जाना चाहिए कि उस महिला ने भुगता, इसलिए उसकी भूल। बाद में जब वह ड्राइवर पकड़ा जाएगा, तब ड्राइवर की भूल। आज जो पकड़ा गया, वही गुनहगार।

ऊपर से कुछ लोग क्या कहते हैं कि 'यदि भगवान होता तो ऐसा होता ही नहीं। इसलिए लगता है भगवान जैसी कोई चीज़ ही नहीं है संसार में। इस महिला का क्या गुनाह था? अब इस दुनिया में भगवान नहीं रहे।' लीजिए! इन लोगों ने ऐसा सार निकाला। अरे, ऐसा किसलिए? भगवान को क्यों बदनाम करते हो? उनका घर क्यों खाली करवाते हो? भगवान से घर खाली करवाने निकल पड़े हैं। अरे भाई, भगवान नहीं होते तो फिर रहा ही क्या इस संसार में? ये लोग क्या समझे कि भगवान की सत्ता नहीं रही। फिर लोगों की भगवान पर आस्था नहीं रहती। ऐसा नहीं है। ये सभी हिसाब चल रहे हैं। यह एक ही जन्म की बात नहीं है। आज उस महिला की भूल पकड़ी गई, इसलिए उसे भुगतना पड़ा। यह सब न्याय है। वह औरत कुचली गई, वह न्याय है। अर्थात् यह जगत् नियमसहित है। संक्षेप में बस इतनी ही बात करनी है।

यदि यह ड्राइवर की भूल होती तो सरकार का कड़ा कानून होता, इतना कड़ा कि उस ड्राइवर को वहीं का वहीं खड़ा करके गोली से उड़ाकर मौत के घाट उतार देते। लेकिन ऐसा तो सरकार भी नहीं कहती, क्योंकि किसी को खत्म नहीं कर सकते। वास्तव में वह गुनहगार नहीं है। उसने खुद नया गुनाह खड़ा किया है, वह गुनाह जब वह भुगतेगा तब, लेकिन उसने आपको गुनाह से मुक्त किया। आप गुनाह

से मुक्त हुए। वह गुनाह से बंध गया। इसलिए हमने कहा है कि उसे सद्बुद्धि हो कि 'तू गुनाह मत बाँधना।'

## एक्सिडेन्ट का मतलब तो...

इस कलियुग में एक्सिडेन्ट (दुर्घटना) और इन्सिडेन्ट (घटना) ऐसे होते हैं कि मनुष्य दुविधा में पड़ जाता है। एक्सिडेन्ट क्या है? 'टू मैनी कॉज़ेज एट ए टाइम' (अनगिनत कारण एक साथ, एक ही समय में) और इन्सिडेन्ट क्या है? 'सो मैनी कॉज़ेज एट ए टाइम।' (बहुत सारे कारण एक साथ एक ही समय में) इसीलिए हम कहते हैं कि 'भुगते उसी की भूल' और सामने वाला तो जब पकड़ा जाएगा, तब उसकी भूल समझी जाएगी।

ये तो, जो पकड़ा गया, उसे चोर कहते हैं। जैसे ऑफिस में एक आदमी पकड़ा गया, उसे चोर कहते हैं, तो क्या ऑफिस में और कोई चोर नहीं है?

**प्रश्नकर्ता :** सभी हैं।

**दादाश्री :** पकड़े नहीं गए, तब तक साहूकार। कुदरत का न्याय तो किसी ने ज़ाहिर किया ही नहीं। बहुत ही सीधा और सटीक है। इसीलिए तो निबेड़ा आ जाता है न! शॉर्ट कट! 'भुगते उसी की भूल', यह एक ही वाक्य समझने से संसार का बहुत कुछ बोझ खत्म हो जाएगा।

भगवान का कानून तो क्या कहता है कि जिस क्षेत्र में, जिस समय जो भुगतता है, वही खुद गुनहगार है। उसमें किसी को, वकील को भी पूछने की ज़रूरत नहीं है। किसी की जेब कट जाए तो काटने वाले के लिए तो आनंद की बात होगी, वह तो जलेबियाँ खा रहा होगा, होटल में चाय-पानी और नाश्ता कर रहा होगा और ठीक उसी

समय जिसकी जेब कटी है, वह भुगत रहा होगा। इसलिए भुगतने वाले की भूल। उसने पहले कभी चोरी की होगी, इसलिए आज पकड़ा गया और जेब काटने वाला जब पकड़ा जाएगा, तब चोर कहलाएगा।

मैं कभी आपकी गलती ढूँढने बैठूँगा ही नहीं। पूरा जगत् सामने वाले की गलती देखता है। भुगतता है खुद, लेकिन गलती सामने वाले की देखता है। बल्कि इससे तो गुनाह दुगने होते जाते हैं और व्यवहार भी उलझता जाता है। यह बात समझ जाओगे तो उलझन कम होती जाएगी।

## मोरबी की बाढ़, क्या कारण?

मोरबी शहर में जो बाढ़ आई थी और जो कुछ हुआ, वह सब किसने किया? वह ढूँढ निकालो ज़रा। किसने किया था वह?

इसलिए हमने एक ही बात लिखी है कि इस दुनिया में भूल किसकी है? खुद को समझने के लिए एक ही चीज़ को दो तरह से समझना है। भुगतने वाले को 'भुगते उसी की भूल', यह बात समझनी है और देखने वाले को 'मैं उसे मदद नहीं कर पा रहा हूँ, मुझे मदद करनी चाहिए', इस तरह से देखना है।

इस जगत् का नियम ऐसा है कि जो आँखों से दिखाई देता है, उसे भूल कहते हैं। जबकि कुदरत का नियम ऐसा है कि जो भुगत रहा है, उसी की भूलहै।

## जहाँ असर हो, वहाँ ज्ञान है या बुद्धि?

**प्रश्नकर्ता :** अखबार में पढ़ें कि औरंगाबाद में ऐसा हुआ या मोरबी में ऐसा हुआ तो हम पर असर हो जाता है। अगर पढ़ने के बाद कुछ भी असर नहीं हो तो क्या उसे जड़ता कहेंगे?

**दादाश्री :** असर नहीं हो, उसी को ज्ञान कहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** यदि असर हो जाए तो उसे क्या कहेंगे?

**दादाश्री :** वह बुद्धि कहलाती है, मतलब संसार कहलाता है। बुद्धि से इमोशनल हो जाते हैं, लेकिन करते कुछ नहीं।

यहाँ पर लड़ाई के समय पाकिस्तान वाले बम डालने आते थे। लोग जब यह अखबार में पढ़ते थे कि वहाँ बम गिरा तो यहाँ पर घबराहट हो जाती थी। यह सारा असर जो डालती है, वह उनकी बुद्धि है और बुद्धि ही संसार खड़ा करती है। ज्ञान असरमुक्त रखता है। अखबार पढ़ने के बावजूद भी असरमुक्त रहता है। असरमुक्त यानी हमें कुछ भी छूए नहीं। हमें तो जानना और देखना ही है।

इस अखबार का क्या करना है? जानना और देखना, बस! जानना मतलब जिसका विस्तृत विवरण किया हो, उसे जानना कहेंगे और जब विस्तृत विवरण नहीं हो, तब उसे देखना कहेंगे। उसमें किसी का दोष नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** काल का दोष तो है न?

**दादाश्री :** काल का भी क्या दोष? भुगते उसी की भूल। काल तो बदलता ही रहेगा न? अच्छे काल में क्या हम सब नहीं थे? चौबीस तीर्थंकर थे, तब क्या हम सब नहीं थे?

**प्रश्नकर्ता :** थे।

**दादाश्री :** तो उस दिन हम चटनी खाने में पड़े रहे, उसमें काल क्या करे बेचारा? काल तो अपने आप आता ही रहेगा न! दिन में काम नहीं करेंगे, फिर भी रात तो आकर रहेगी या नहीं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** फिर रात को दो बजे चने लेने भेजें तो दुगने दाम देने पर भी क्या कोई देगा?

## लोगों को लगता है, यह उल्टा न्याय

एक साइकिल सवार, उसके राइट वे (सही रास्ते) पर है और एक स्कूटर सवार उल्टे रास्ते से आया, रोंग वे (गलत रास्ते) से और साइकिल वाले की टाँग तोड़ दी। अब किसे भुगतना पड़ा?

**प्रश्नकर्ता :** साइकिल वाले को, जिसकी टाँग टूटी है उसे।

**दादाश्री :** हाँ, उन दोनों में आज किसे भुगतना पड़ रहा है? जिसकी टाँग टूटी, उसे। और आज इस स्कूटर वाले के निमित्त से पहले का हिसाब चुकता हुआ। स्कूटर वाले को अभी कोई दुःख नहीं है। वह तो जब पकड़ा जाएगा, तब उसका गुनाह ज़ाहिर होगा। अतः जो भुगते उसी की भूल।

**प्रश्नकर्ता :** जिसे चोट लगी, उसका क्या गुनाह?

**दादाश्री :** उसका गुनाह, उसका पहले का हिसाब है। जो आज चुकता हुआ। बिना किसी हिसाब के किसी को कोई भी दुःख नहीं हो सकता। हिसाब साफ नहीं हुए हैं इसलिए दुःख मिलता है। यह उसका हिसाब आया, इसलिए पकड़ा गया। वर्ना इतनी बड़ी दुनिया में दूसरा कोई क्यों नहीं पकड़ा गया? अगर पूछे कि आप क्यों निडर होकर घूम रहे हैं? तब कहेंगे, 'अपना हिसाब होगा तो होगा, हिसाब नहीं होगा तो क्या होने वाला है? लोग ऐसा कहते हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** भुगतना नहीं पड़े, उसके लिए क्या उपाय है?

**दादाश्री :** मोक्ष में जाने का। किसी को किंचित्मात्र भी दुःख नहीं दें, कोई यदि दुःख दे, उसे हम जमा कर लें तो अपने बहीखाते

साफ हो जाएँगे। किसी को नया नहीं दें, नया व्यापार शुरू नहीं करें और जो पुराना बाकी है उसे निपटा लें तो चुकता हो जाएगा।

**प्रश्नकर्ता :** तो जिसकी टाँग टूटी, उस भुगतने वाले को ऐसा मानना है कि मेरी भूल है और उसे स्कूटर वाले के विरुद्ध कुछ नहीं करना चाहिए?

**दादाश्री :** कुछ नहीं करना चाहिए, ऐसा नहीं। हम क्या कहते हैं कि मानसिक परिणाम नहीं बदलने चाहिए। व्यवहार में जो कुछ हो रहा हो, उसे होने देना है लेकिन मानसिक राग-द्वेष नहीं होने चाहिए। जिसे ऐसा समझ में आ गया कि 'मेरी भूल है', उसे राग-द्वेष नहीं होंगे।

व्यवहार में पुलिस वाला कहे कि नाम लिखवाओ तो लिखवाना पड़ेगा। सारा व्यवहार करना पड़ेगा लेकिन नाटकीय, ड्रामेटिक, राग-द्वेष नहीं करना चाहिए। हमें ऐसा समझ में आ गया कि 'हमारी भूल है' तो फिर उस स्कूटर वाले बेचारे का क्या दोष? यह जगत् तो खुली आँखों से देख रहा है, इसलिए उसे सबूत तो देने ही होंगे, लेकिन हमें स्कूटर वाले के प्रति राग-द्वेष नहीं होने चाहिए। क्योंकि उसकी भूल है ही नहीं। हम जो ऐसा आरोप लगाते हैं कि 'उसकी भूल है' वह आपकी दृष्टि से अन्याय दिखाई देता है। लेकिन वास्तव में आपकी दृष्टि में फर्क होने से अन्याय दिखाई देता है।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** कोई आपको दु:ख दे रहा हो तो उसकी भूल नहीं है लेकिन यदि आप दु:ख भुगत रहे हो तो वह आपकी भूल है। यह कुदरत का कानून है। जगत् का कानून कैसा है? जो दु:ख दे, उसकी भूल है।

अगर इस सूक्ष्म बात को समझेगा तो समझ में आएगा न, तब जाकर इंसान को समाधान रहेगा।

## उपकारी हैं, कर्म से मुक्ति दिलाने वाले

यह तो, बहू के मन में ऐसा असर हो जाता है कि, 'मेरी सास मुझे परेशान करती है।' यह बात उसे रात-दिन याद रहती है या भूल जाती है?

**प्रश्नकर्ता :** याद रहती ही है।

**दादाश्री :** रात-दिन याद रहती है। इसलिए फिर शरीर पर भी असर होता है। इसलिए फिर उसे अन्य कोई अच्छी चीज़ दिखाई नहीं देती। इसलिए हम उसे क्या समझाते हैं कि इसे अच्छी सास मिली, इसे भी अच्छी सास मिली और तुम्हें क्यों ऐसी सास मिली? यह तो आपका पूर्वजन्म का हिसाब है, इसे चुका दो। किस तरह चुकाना है, यह भी हम बताते हैं, ताकि वह सुखी हो जाए। क्योंकि दोषित उसकी सास नहीं है। जो भुगतता है, उसी की भूल है। यानी सामने वाले का दोष नहीं है।

जगत् में किसी का दोष नहीं है, दोष निकालने वाले का दोष है। जगत् में कोई दोषित है ही नहीं। सब अपने-अपने कर्मों के उदय से हैं। सब जो भी भुगत रहे हैं, वह आज का गुनाह नहीं है। पिछले जन्म के कर्मों के फलस्वरूप सब हो रहा है। आज तो उसे पछतावा हो रहा हो लेकिन कॉन्ट्रैक्ट हो चुका है, तो अब क्या हो सकता है? उसे पूरा किए बिना चारा ही नहीं है।

इस दुनिया में यदि आपको किसी की भूल खोज निकालनी हो तो, 'जो भुगत रहा है, उसी की भूल है।' बहू सास को दुःख दे रही हो या सास बहू को दुःख दे रही हो, उसमें भुगतना किसे पड़ रहा है? सास को। तो सास की भूल है। अगर सास बहू को दुःख दे रही हो, तो बहू को इतना समझ लेना चाहिए कि 'मेरी भूल है।' दादा जी के ज्ञान के आधार पर यह समझ लेना कि 'मेरी भूल होगी, इसीलिए

ये गालियाँ दे रही हैं।' मतलब सास का दोष नहीं निकालना चाहिए। सास का दोष निकालने से ज़्यादा उलझ गया है, कॉम्प्लेक्स होता जा रहा है और सास को बहू परेशान कर रही हो तो सास को दादा जी के ज्ञान से समझ लेना चाहिए कि जो भुगते उसी की भूल, इस हिसाब से मुझे निभा लेना चाहिए।

सास बहू से लड़े फिर भी बहू मज़े में हो और सास को ही भुगतना पड़े, तब भूल सास की है। जेठानी को उकसाकर आपको भुगतना पड़े तो वह आपकी भूल और बिना उकसाए भी वह देने आई, तो पिछले जन्म का कुछ हिसाब बाकी होगा, वह चुका दिया। तब आप फिर से गलती मत करना, वर्ना फिर से भुगतना पड़ेगा। इसलिए छूटना हो तो जो कुछ भी कड़वा-मीठा (गालियाँ आदि) आए, उसे जमा कर लेना। हिसाब चुक जाएगा। इस जगत् में बिना हिसाब के आँख से आँख भी नहीं मिलती, तो फिर क्या बाकी सब बिना हिसाब के होता होगा? आपने जितना-जितना जिस किसी को दिया होगा, उतना-उतना आपको वापस मिलेगा, तब आप खुश होकर जमा कर लेना कि, 'हाश, अब मेरा हिसाब पूरा होगा।' नहीं तो भूल करोगे तो फिर से भुगतना ही पड़ेगा।

हमने 'भुगते उसी की भूल' यह सूत्र प्रकाशित किया है, लोग इसे आश्चर्य मानते हैं कि सही खोजबीन है यह!

## गियर में उँगली फँसी, किसकी भूल?

जो कड़वाहट भुगते, वही कर्ता। कर्ता ही विकल्प है। खुद की बनाई हुई मशीनरी में गियर व्हील हो और उसमें आपकी उँगली आ जाए तब अगर उस मशीन से आप लाख बार कहो कि 'भाई, मेरी उँगली है, मैंने खुद तुझे बनाया है, तो क्या वह गियर व्हील उँगली छोड़ देगा?' नहीं छोड़ेगा। वह तो आपको समझाता है कि 'भाई, इसमें

मेरा क्या दोष? तूने भुगता इसलिए तेरी भूल।' इसी प्रकार बाहर भी सब जगह सिर्फ मशीनरी ही हैं। ये सभी लोग केवल गियर ही हैं। गियर नहीं होते तो पूरे मुंबई में कोई पत्नी अपने पति को दुःख नहीं देती और कोई पति अपनी पत्नी को दुःख नहीं देता। अपने खुद के परिवार को तो सभी सुखी ही रखते लेकिन ऐसा नहीं है। ये बच्चे, पति-पत्नी सभी मात्र मशीनरी ही हैं, मात्र गियर हैं।

## पहाड़ को क्या वापस पत्थर मारोगे?

**प्रश्नकर्ता :** कोई हमें पत्थर मारे और उससे हमें चोट लगे तो और अधिक उद्वेग होता है।

**दादाश्री :** चोट लगने से उद्वेग होता है। नहीं? लेकिन पहाड़ पर से लुढ़कते-लुढ़कते कोई पत्थर सिर पर आ लगे और खून निकलने लगे तो?

**प्रश्नकर्ता :** उस परिस्थिति में हम ऐसा मानेंगे कि कर्म के अधीन हमें चोट लगनी होगी, इसलिए लगी।

**दादाश्री :** लेकिन क्या पहाड़ को गालियाँ नहीं दोगे? गुस्सा नहीं करोगे उस वक्त?

**प्रश्नकर्ता :** उसमें गुस्सा आने का कारण नहीं है। क्योंकि हम उसे नहीं पहचानते जिसने यह किया है।

**दादाश्री :** वहाँ पर क्यों समझदारी आ जाती है?! सहज रूप से ही समझदारी आ जाती है या नहीं आती? वैसे ही ये सब भी पहाड़ ही हैं। जो पत्थर मारते हैं, गालियाँ देते हैं, चोरी करते हैं, वे सभी पहाड़ ही हैं, चेतन नहीं हैं। यह समझ में आ जाए तो काम बन जाए।

कोई गुनहगार दिखाई देता है तो जो आपके भीतर बैठे हुए शत्रु

क्रोध-मान-माया-लोभ हैं, वे ऐसा दिखाते हैं। खुद की दृष्टि से वह गुनहगार नहीं दिखाई देता, क्रोध-मान-माया-लोभ दिखाते हैं। जिसमें क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं हैं, उसे गुनहगार दिखाने वाला कोई है ही नहीं और उसे कोई गुनहगार दिखाई भी नहीं देता। वास्तव में कोई गुनहगार है ही नहीं। यह तो, क्रोध-मान-माया-लोभ घुस गए हैं और वे 'मैं चंदूभाई हूँ' ऐसा मानने से घुस गए हैं। 'मैं चंदूभाई हूँ', यह मान्यता छूट गई तो क्रोध-मान-माया-लोभ चले जाएँगे। फिर भी घर खाली करने में उन्हें थोड़ी देर लगेगी, क्योंकि कई दिनों से घुसे हुए हैं न!

## ये तो संस्कारी रीति-रिवाज

**प्रश्नकर्ता :** एक तो खुद दुःख भुगत रहा है, अब वह खुद की भूल से भुगतता है। वहाँ पर दूसरे लोग अपनी ज़रूरत से ज़्यादा अक़्लमंदी दिखाते हुए आते हैं कि, 'अरे, क्या हुआ, क्या हुआ?' लेकिन इसमें ऐसा कह सकते हैं कि उन्हें इससे क्या लेना-देना? वह खुद की भूल से भुगत रहा है। आप लोग उसका दुःख नहीं ले सकते।

**दादाश्री :** ऐसा है न, ये जो पूछने आते हैं, मिलने आते हैं, वे अपने बहुत उच्च संस्कार के नियम के आधार पर आते हैं। ऐसे मिलने जाना यानी क्या कि वहाँ जाकर उस आदमी से पूछते हैं, 'कैसे हो भाई, अब आपको कैसा लग रहा है?' तब वह कहेगा, 'अच्छा है अब।' उसके मन में ऐसा होता है कि 'ओहोहो, मेरी इतनी वैल्यू! कितने लोग मुझसे मिलने आते हैं!' इससे वह खुद का दुःख भूल जाता है।

## गुणा-भाग

जोड़ना और घटाना, ये दोनों नैचुरल एडजस्टमेन्ट हैं और गुणा-

भाग, ये मनुष्य बुद्धि से किया करते हैं। मतलब रात को सोते समय मन में सोचता है कि ये प्लॉट महँगे पड़ रहे हैं, इसलिए उस जगह पर सस्ते हैं, वह मैं ले लूँगा। इस तरह भीतर गुणा करता है। मतलब सुख का गुणा करता है और दुःख में भाग लगाता है। वह सुख का गुणा करता है इसलिए, फिर भयंकर दुःखों की प्राप्ति होती है और दुःख में भाग लगाए फिर भी दुःख कम नहीं होते! सुख का गुणा करते हैं या नहीं? 'ऐसा हो तो अच्छा, ऐसा हो तो अच्छा', करते हैं या नहीं करते? और यह प्लस-माइनस होता है। दिस इज़ नैचुरल एडजस्टमेन्ट। यदि दो सौ रुपये खो गए या फिर व्यापार में पाँच हज़ार का नुकसान हुआ तो वह नैचुरल एडजस्टमेन्ट है। कोई दो हज़ार रुपये जेब काटकर ले गया, वह भी नैचुरल एडजस्टमेन्ट है। 'भुगते उसी की भूल', यह हम ज्ञान में देखकर गारन्टी से कहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा कहा जाता है कि सुख का गुणा करते हैं, उसमें गलत क्या है?

**दादाश्री :** गुणा करना हो तो दुःख का करना, सुख का करोगे तो महा मुसीबत में आ जाओगे। गुणा करने का शौक हो तो दुःख का करना कि, मैंने किसी को एक थप्पड़ मारा, तो उसने मुझे दो थप्पड़ मारे। वह अच्छा हुआ, ऐसे और कोई भी मारने वाला मिले तो अच्छा होगा। इससे हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा। यदि दुःख का गुणा करना नहीं रुचे तो मत करना लेकिन सुख का गुणा तो करना ही मत!

## बने प्रभु के गुनहगार

'भुगते उसी की भूल', यह भगवान की भाषा है। और यहाँ जिसने चोरी की, उसे लोग गुनहगार मानते हैं। कोर्ट भी चोरी करने वाले को ही गुनहगार मानती है।

यानी यह बाहर के गुनाह रोकने के लिए लोगों ने अंदर के गुनाह शुरू कर दिए। जिससे भगवान के गुनहगार बन जाते हैं, वैसे गुनाह शुरू कर दिए। अरे, भगवान का गुनहगार मत बनना। यहाँ का गुनाह होगा तो कोई हर्ज नहीं। दो महीने जेल जाकर वापस आ जाओगे, लेकिन भगवान के गुनहगार मत बनना। आपकी समझ में आया यह? यदि यह सूक्ष्म बात समझ में आ जाए तो काम हो जाएगा। यह 'भुगते उसी की भूल' तो कई लोगों की समझ में आ गया है। क्योंकि ये सब क्या ऐसे-वैसे लोग हैं? बहुत विचारशील लोग हैं। हमने एक बार समझा दिया है। अब बहू सास को दुःख दिया करती है और सास ने यही एक सूत्र सुन रखा हो कि 'भुगते उसी की भूल', तब बहू के बार-बार दुःख देने पर वह तुरंत समझ जाएगी कि मेरी ही भूल होगी, तभी यह दुःख दे रही है न! तो उसका निबेड़ा आ जाएगा। वर्ना निबेड़ा नहीं आएगा और बैर बढ़ता रहेगा।

## समझना कठिन लेकिन वास्तविकता

अन्य किसी की भूल नहीं है। जो कुछ भी भूल है, वह अपनी ही है। खुद की भूल की वजह से यह सारा है। इसका आधार क्या? तो वह है, 'खुद की भूल।'

**प्रश्नकर्ता :** देर से ही सही, लेकिन समझ में आ रहा है।

**दादाश्री :** देर से समझ में आए, वह बहुत अच्छा है। एक ओर शरीर शिथिल होता जाए और फिर समझ में आता जाए तो उसका तो काम हो जाएगा! लेकिन अगर शरीर मज़बूत हो, तब समझ में आ जाए तो?

हमने 'भुगते उसी की भूल' सूत्र दिया है न, वह सभी शास्त्रों का सार दिया है। यदि आप मुंबई जाएँ तो वहाँ हज़ारों घरों में यह सूत्र लिखा हुआ है, बड़े-बड़े अक्षरों में 'भुगते उसी की भूल'। जब

कभी गिलास फूट जाए, उस वक्त बच्चे आमने-सामने देखकर कह देते हैं कि 'मम्मी, आपकी भूल है'। हाँ, बच्चे भी समझ जाते हैं। मम्मी से कहते हैं, 'आपका मुँह लटका हुआ है, यह आपकी भूल है।' कढ़ी में नमक ज़्यादा हो जाए, तब हमें देख लेना चाहिए कि किसका मुँह बिगड़ा? हाँ, उसी की भूल। दाल गिर जाए तो देख लेना, किसका मुँह बिगड़ा? तो उसकी भूल है। सब्ज़ी में मिर्च ज़्यादा हो जाए तो सभी के मुँह देख लेना कि किसका मुँह बिगड़ा? तो उसकी भूल है यह। भूल किसकी है? 'भुगते उसी की भूल'।

आपको सामने वाले का मुँह फूला हुआ दिखा तो वह आपकी भूल है। तब उसके 'शुद्धात्मा' को याद करके उसके नाम से माफ़ी माँग लेना, तो ऋणानुबंध से छुटकारा हो जाएगा।

वाइफ ने आपकी आँखों में दवाई डाली और आपकी आँख में दर्द होने लगा तो वह आपकी भूल। वीतराग ऐसा कहते हैं कि जो सहन करे उसी की भूल है, जबकि ये सब लोग निमित्त को पकड़ते हैं!

अपनी ही भूलों की मार पड़ रही है। जिसने पत्थर फेंका उसकी भूल नहीं है, जिसे पत्थर लगा उसकी भूल है! आपके इर्द-गिर्द के बाल-बच्चों की कैसी भी भूलें या दुष्कृत्य हों, लेकिन यदि उसका असर आप पर नहीं होता तो आपकी भूल नहीं है और अगर आप पर असर होता है तो वह आपकी ही भूल है। ऐसा निश्चित रूप से समझ लेना!

## जमा-उधार का नया तरीका

दो आदमी(चंदूभाई और लक्ष्मीचंद) हैं। (चंदूभाई) लक्ष्मीचंद पर आरोप लगाएँ कि 'आपने मेरा बहुत बुरा किया है।' तो लक्ष्मीचंद को रातभर नींद नहीं आती और वह (चंदूभाई) चैन से सो जाता है,

इसलिए भूल लक्ष्मीचंद की है। लेकिन दादा जी का सूत्र 'भुगते उसी की भूल' उसे याद आ गया तो लक्ष्मीचंद भी चैन से सो जाएगा वर्ना उसे गालियाँ देता रहेगा!

आपने किसी सुलेमान को पैसे उधार दिए हों और वह छः महीनों तक पैसे नहीं लौटाए, तो? उधार किसने दिया? आपके अहंकार ने! उसने प्रोत्साहन दिया और आपने दयालु होकर पैसे दिए, इसलिए अब सुलेमान के खाते में जमा करके, अहंकार के खाते में उधार लिख लो।

## ऐसा पृथक्करण तो करो

जिसका ज़्यादा दोष है, वही इस संसार में मार खाता है। मार कौन खाता है? यह देख लेना। जो मार खाता है, वही दोषित है।

जो भुगते, उस पर से हिसाब निकल आएगा कि कितनी भूल थी! घर के दस सदस्य हैं। उनमें से दो को विचार तक नहीं आता कि घर कैसे चलता है। दो सदस्य ऐसा सोचते हैं कि घर में हेल्प करनी चाहिए। दो-तीन सदस्य घर चलाने में मदद करते हैं, एक तो पूरा दिन इसी चिंता में रहता है कि घर कैसे चलाएँ, और दो सदस्य तो आराम से सोते रहते हैं। तब भूल किसकी? भाई! भुगते उसी की, चिंता करे उसी की। जो आराम से सोते हैं, उसे कुछ भी नहीं।

भूल किसकी है? तब कहेंगे कि कौन भुगत रहा है, इसका पता लगाओ। अगर नौकर के हाथों से दस गिलास टूट गए तो उसका असर घर के लोगों पर होगा या नहीं होगा? अब घर के लोगों में बच्चों को तो कुछ भुगतना नहीं होता, लेकिन उनके माँ-बाप अकुलाते रहते हैं। उसमें भी माँ थोड़ी देर बाद आराम से सो जाती है, लेकिन बाप हिसाब लगाता रहता है कि पचास रुपयों का नुकसान हुआ। वह ज़्यादा एलर्ट है, इसलिए ज़्यादा भुगतता है। 'भुगते उसी की भूल'।

भूल को हमें ढूँढने नहीं जाना पड़ता। बड़े-बड़े जजों या वकीलों को भी ढूँढने नहीं जाना पड़ता। उसके बजाय यह सूत्र दिया है, यह थर्मामीटर, कि 'भुगते उसी की भूल'। यदि कोई इतना पृथक्करण करते-करते आगे बढ़ता चलेगा, तो सीधा मोक्ष में पहुँच जाएगा।

## भूल, डॉक्टर की या मरीज़ की?

डॉक्टर ने मरीज़ को इन्जेक्शन दिया और डॉक्टर घर जाकर चैन से सो गया। लेकिन मरीज़ को तो सारी रात इन्जेक्शन का दर्द रहा। तो इसमें भूल किसकी? मरीज़ की! और डॉक्टर तो जब भुगतेगा, तब उसकी भूल पकड़ी जाएगी।

बेटी के लिए डॉक्टर बुलाएँ और वह आकर देखे कि नब्ज़ नहीं चल रही हैं, तब डॉक्टर क्या कहेगा? 'मुझे क्यों बुलाया?' अरे, तूने हाथ लगाया उसी वक्त गई, वर्ना नब्ज़ तो चल रही थी। लेकिन डॉक्टर फीस के दस रुपये ले जाता है और ऊपर से डाँटता भी है। 'अरे, डाँटना हो तो पैसे मत ले और पैसे लेने हों तो डाँटना मत।' लेकिन नहीं, फीस तो लेनी ही है! मतलब पैसे तो देने पड़ते हैं। ऐसा जगत् है। इसलिए इस काल में न्याय मत ढूँढना।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा भी हो सकता है कि मुझसे दवाई लें और मुझे ही डाँटें।

**दादाश्री :** हाँ, ऐसा भी हो सकता है। फिर भी सामने वाले को गुनहगार मानोगे तो आप गुनहगार बनोगे। अभी कुदरत न्याय ही कर रही है।

ऑपरेशन करते समय मरीज़ मर जाए तो भूल किसकी?

चिकनी मिट्टी में बूट पहनकर चले और फिसल जाए तो उसमें दोष किसका? भाई, तेरा ही! यह समझ नहीं थी कि नंगे पैर

घूमते तो उँगलियों की पकड़ रहती और गिरते नहीं? इसमें किसका दोष? मिट्टी का, बूट का या तेरा?! भुगते उसी की भूल! इतना ही पूर्ण रूप से समझ में आ जाए तो भी वह मोक्ष में ले जाए। यह जो दूसरों की भूल देखते हैं, वह तो बिल्कुल गलत है। खुद की भूल से ही निमित्त मिलता है। ये तो, अगर जीवित निमित्त मिल जाए तो उसे काटने दौड़ते हैं और अगर काँटा लग जाए तो क्या करेगा? चौराहे पर काँटा पड़ा हो, हज़ारों लोग गुज़र जाएँ फिर भी किसी को नहीं चुभता, लेकिन चंदूभाई निकले कि काँटा उनके पैर में चुभ जाता है। 'व्यवस्थित' तो कैसा है? जिसे काँटा लगना हो उसी को लगेगा। सभी संयोग इकट्ठा कर देगा, लेकिन उसमें निमित्त का क्या दोष?

यदि कोई आदमी दवाई छिड़ककर खाँसी करवाए तो उसके लिए तकरार हो जाती है, लेकिन जब मिर्च के छौंक से खाँसी आए, तब क्या तकरार होती है? यह तो जो पकड़ा जाए, उसी से लड़ते हैं। निमित्त को काटने दौड़ते हैं। लेकिन यदि हकीकत जानें कि करने वाला कौन है और किससे हो रहा है, तब फिर क्या कुछ झंझट रहेगी? तीर चलाने वाले की भूल नहीं है, जिसे तीर लगा, उसकी भूल है। तीर चलाने वाला तो जब पकड़ा जाएगा, तब उसकी भूल। अभी तो जिसे तीर लगा, वह पकड़ा गया। जो पकड़ा गया, वह पहला गुनहगार और दूसरा तो जब पकड़ा जाएगा, तब उसकी भूल।

## बच्चों की ही भूलें निकालते हैं, सभी

आपकी पढ़ाई चल रही थी, तब उसमें कोई बाधा आई थी?

**प्रश्नकर्ता :** बाधाएँ तो आईं थीं।

**दादाश्री :** वे आपकी भूल से ही। उसमें शिक्षक या अन्य किसी की भूल नहीं थी।

**प्रश्नकर्ता :** ये विद्यार्थी शिक्षक के सामने उद्दंडता करते हैं। वे कब सुधरेंगे?

**दादाश्री :** जो भूल का परिणाम भुगते, उसी की भूल है। ये गुरु ही ऐसे पैदा हुए हैं, इसलिए शिष्य उद्दंडता करते हैं। ये बच्चे तो सयाने ही हैं लेकिन गुरु और माँ-बाप घनचक्कर हैं। और बुज़ुर्ग अपनी पुरानी पकड़ नहीं छोड़ते तो फिर बच्चे उद्दंडता करेंगे ही न? अभी माँ-बाप का चारित्र ऐसा नहीं होता कि बच्चे उद्दंड नहीं हो। यह तो बुज़ुर्गों का चारित्र कम हो गया है, इसलिए बच्चे उद्दंडता करते हैं।

## भूलों के सामने दादा जी की समझ

'भुगते उसी की भूल' यह सूत्र मोक्ष में ले जाएगा। कोई पूछे कि 'मैं अपनी भूलें कैसे ढूँढूँ?' तो हम उसे सिखाते हैं कि 'तुझे कहाँ-कहाँ भुगतना पड़ता है? वही तेरी भूल। तेरी क्या भूल हुई होगी कि ऐसा भुगतना पड़ा? यह ढूँढ निकालना।' यह तो पूरा दिन भुगतना पड़ता है, इसलिए ढूँढ निकालना चाहिए कि क्या-क्या भूलें हुई हैं!

भुगतने के साथ ही मालूम हो जाएगा कि यह हमारी भूल है। यदि हमसे भूल हुई होगी तब हमें टेन्शन होगा न!

हमें सामने वाले की भूल किस तरह समझ में आती है? सामने वाले के होम (आत्मा) और फॉरेन (अनात्मा) अलग दिखाई देते हैं। सामने वाले के फॉरेन में भूलें होंगी, गुनाह होंगे तो हम कुछ नहीं कहते, लेकिन होम में कुछ हुआ तो हमें उसे टोकना पड़ता है। मोक्षमार्ग में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए।

अंदर बहुत बड़ी जमात है, उसमें यह मालूम होना चाहिए कि कौन भुगत रहा है। कभी अहंकार भुगतता है, तो वह अहंकार की

भूल है। कई बार मन भुगतता है, तो वह मन की भूल है। कभी चित्त भुगतता है, उस समय चित्त की भूल है। खुद की भूलों से 'खुद' अलग रह सकता है। बात तो समझनी पड़ेगी न?

## मूल भूल कहाँ है?

भूल किसकी? भुगते उसकी! क्या भूल? तब कहते हैं कि 'मैं चंदूभाई हूँ' यह मान्यता ही आपकी भूल है। क्योंकि इस जगत् में कोई दोषित नहीं है। इसलिए कोई गुनहगार भी नहीं है, ऐसा सिद्ध होता है।

बाकी, इस दुनिया में कोई कुछ कर ही नहीं सकता। लेकिन जो हिसाब बंध चुका है, वह छोड़ेगा नहीं। जो घोटाले वाला हिसाब हो गया है, वह घोटाले वाला फल दिए बगैर रहेगा नहीं। लेकिन अब नए सिरे से घोटाला मत करना, अब रुक जाओ। जब से यह पता चले, तब से रुक जाओ। जो पुराने घोटाले हो चुके हैं, वे तो हमें चुकाने पड़ेंगे, लेकिन इतना देखना कि नए नहीं हों। संपूर्ण ज़िम्मेदारी हमारी ही है, भगवान की ज़िम्मेदारी नहीं है। भगवान इसमें हाथ नहीं डालते। इसलिए भगवान भी इसे माफ नहीं कर सकते। कई भक्त ऐसा मानते हैं कि, 'मैं पाप कर रहा हूँ लेकिन भगवान माफ कर देंगे।' भगवान के यहाँ माफी नहीं है। दयालु लोगों के यहाँ माफी होती है। किसी दयालु से कहें कि 'साहब, मुझसे आपके प्रति बहुत भूल हो गई है।' तो वह तुरंत माफ कर देगा।

दु:ख देने वाला तो निमित्त मात्र है, लेकिन मूल भूल खुद की ही है। जो फायदा करता है, वह भी निमित्त है और जो नुकसान करवाता है, वह भी निमित्त है। लेकिन वह अपना ही हिसाब है, इसलिए ऐसा होता है।

हम आपसे साफ-साफ कह देते हैं कि आपकी 'बाउन्ड्री' में

किसी को उँगली डालने की शक्ति नहीं है और यदि आपकी भूल है तो कोई भी उँगली डाल सकता है। अरे, लाठी भी फटकारेगा। 'हम' तो पहचान गए हैं कि कौन घूँसे मार रहा है। सभी आपका अपना ही है! आपका व्यवहार किसी और ने नहीं बिगाड़ा। आपका व्यवहार आपने ही बिगाड़ा है। यू आर होल एन्ड सोल रिस्पोन्सिबल फोर यॉर व्यवहार।

## न्यायाधीश, 'कम्प्यूटर' समान

भुगते उसी की भूल, यह 'गुप्त तत्व' है। यहाँ बुद्धि थक जाती है। जहाँ मतिज्ञान काम नहीं करता, वह बात 'ज्ञानीपुरुष' के पास आकर पता चलती है। वह 'जैसी है, वैसी' ही है। इस गुप्त तत्व को बहुत सूक्ष्म अर्थ में समझना चाहिए। यदि न्याय करने वाला चेतन होता तो वह पक्षपात भी करता लेकिन जगत् का न्याय करने वाला निश्चेतन चेतन है। उसे जगत् की भाषा में समझना हो तो वह कम्प्यूटर जैसा है। कम्प्यूटर में प्रश्न डालें तो तब कम्प्यूटर से भूल हो सकती है, लेकिन कुदरत के न्याय में भूल नहीं हो सकती। इस जगत् का न्याय करने वाला निश्चेतन चेतन है और 'वीतराग' है। यदि 'ज्ञानीपुरुष' का एक ही शब्द समझ जाए और ग्रहण कर ले तो मोक्ष में ही जाएगा। किसका शब्द? ज्ञानीपुरुष का! इससे, किसी को किसी की सलाह ही नहीं लेनी पड़ेगी कि इसमें किसकी भूल है? 'भुगते उसी की भूल'।

यह साइन्स है, पूरा विज्ञान है। इसमें एक अक्षर की भी भूल नहीं है। यह तो विज्ञान यानी केवल विज्ञान ही है। पूरे वर्ल्ड के लिए है। ऐसा नहीं है कि यह केवल इन्डिया के लिए ही है। फॉरेन में सभी के लिए है यह!

जहाँ ऐसा स्पष्ट व निर्मल न्याय आपको दिखा देते हैं, वहाँ

न्याय-अन्याय का बँटवारा करने का कहाँ रहता है? यह बहुत ही गहन बात है। तमाम शास्त्रों का सार बता रहा हूँ। यह तो एक्ज़ेक्ट वह बता रहा हूँ कि, 'वहाँ' का जजमेन्ट(न्याय) कैसे चल रहा है। 'भुगते उसी की भूल'। हमारे पास से 'भुगते उसी की भूल', यह सूत्र बिल्कुल एक्ज़ेक्ट निकला है! उसे जो कोई इस्तेमाल करेगा, उसका कल्याण हो जाएगा!

**जय सच्चिदानंद**

# संपर्क सूत्र

## दादा भगवान परिवार


**अडालज** : **त्रिमंदिर**, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421.
फोन : (079) 39830100, E-mail : info@dadabhagwan.org

**राजकोट** : **त्रिमंदिर,** अहमदाबाद-राजकोट हाईवे, तरघड़िया चोकड़ी (सर्कल),
पोस्ट : मालियासण, जि.-राजकोट. फोन : 9924343478

**भुज** : **त्रिमंदिर,** हिल गार्डन के पीछे, एयरपोर्ट रोड. फोन : (02832) 290123

**अंजार** : **त्रिमंदिर,** अंजार-मुन्द्र रोड, सीनोग्रा पाटीया के पास, सीनोग्रा गाँव,
ता.-अंजार, फोन : 9924346622

**मोरबी** : **त्रिमंदिर,** मोरबी-नवलखी हाईवे, पो-जेपुर, ता.-मोरबी,
जि.-राजकोट. फोन : (02822) 297097

**सुरेन्द्रनगर** : **त्रिमंदिर**, सुरेन्द्रनगर-राजकोट हाईवे, लोकविद्यालय के पास, मुळी रोड.
फोन : 9737048322

**अमरेली** : **त्रिमंदिर**, लीलीया बायपास चोकडी, खारावाडी, फोन : 9924344460

**गोधरा** : **त्रिमंदिर,** भामैया गाँव, एफसीआई गोडाउन के सामने, गोधरा.
(जि.-पंचमहाल). फोन : (02672) 262300

**वडोदरा** : बाबरीया कोलेज के पास, वडोदरा-सुरत हाई-वे, NH-8, वरणामा गाँव.
फोन : 9574001557

**वडोदरा** : दादा मंदिर, 17, मामा की पोल-मुहल्ला, रावपुरा पुलिस स्टेशन के सामने,
सलाटवाड़ा, वडोदरा. फोन : 9924343335

**अहमदाबाद** : **दादा दर्शन,** 5, ममतापार्क सोसाइटी, नवगुजरात कॉलेज के पीछे,
उस्मानपुरा, अहमदाबाद-380014. फोन : (079) 27540408

| | | | |
|---|---|---|---|
| **मुंबई** | : 9323528901 | **दिल्ली** | : 9810098564 |
| **कोलकता** | : 9830093230 | **चेन्नई** | : 9380159957 |
| **जयपुर** | : 9351408285 | **भोपाल** | : 9425024405 |
| **इन्दौर** | : 9039936173 | **जबलपुर** | : 9425160428 |
| **रायपुर** | : 9329644433 | **भिलाई** | : 9827481336 |
| **पटना** | : 7352723132 | **अमरावती** | : 9422915064 |
| **बेंगलूर** | : 9590979099 | **हैदराबाद** | : 9989877786 |
| **पूणे** | : 9422660497 | **जलंधर** | : 9814063043 |

**U.S.A.** : **DBVI Tel. :** +1 877-505-DADA (3232),
**Email :** info@us.dadabhagwan.org

| | | | |
|---|---|---|---|
| **U.K.** | : +44 330-111-DADA (3232) | **Australia** | : +61 421127947 |
| **Kenya** | : +254 722 722 063 | **New Zealand** | : +64 21 0376434 |
| **UAE** | : +971 557316937 | **Singapore** | : +65 81129229 |

**www.dadabhagwan.org**

## भुगते उसी की भूल

अगर जेब कट जाए तो उसमें भूल किसकी? इसकी जेब नहीं कटी और तुम्हारी ही क्यों कटी? तुम दोनों में से अभी भुगत कौन रहा है? 'भुगते उसी की भूल!'

'भुगते उसी की भूल' यह नियम मोक्ष में ले जाएगा। कोई पूछे कि मैं अपनी भूलें कैसे ढूँढूँ? तो हम उसे सिखाते हैं कि तुझे कहाँ-कहाँ भुगतना पड़ता है? वही तेरी भूल। तेरी क्या भूल हुई होगी कि ऐसा भुगतना पड़ा? यह ढूँढ निकालना। यह तो पूरा दिन भुगतना पड़ता है, तो ढूँढ निकालना चाहिए कि क्या-क्या भूलें हुई हैं!

यह तो हम अपनी ही भूलों से बंधे हुए हैं। कहीं लोगों ने आकर नहीं बाँधा। यह भूल खत्म हो जाए तो फिर मुक्त।

-दादाश्री

dadabhagwan.org

ISBN 978-93-86289-42-1

9 789386 289421

Printed in India

Price ₹10